International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Volume 14, Issue 2, March-April,

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के शैक्षिक दृष्टिकोण एवं कार्य संतुष्टि के मध्य संबंध का एक समीक्षात्मक अध्ययन

संध्या[1], डॉ॰ राम रहीस[2]

[1]शिक्षक शिक्षा विभाग (बी॰एड॰), एम. एल. के. पी. जी. कॉलेज, बलरामपुर, संबद्ध -सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु सिद्धार्थ नगर उ0प्र0
[2]शोध निर्देशक असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग (बी॰एड॰) , एम. एल. के. पी. जी. कॉलेज , बलरामपुर, संबद्ध -सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु सिद्धार्थ नगर उ0प्र0

सारांश

शिक्षकों का शैक्षिक दृष्टिकोण शिक्षा की गुणवत्ता का महत्वपूर्ण निर्धारक है। सकारात्मक दृष्टिकोण न केवल शिक्षक के कार्य को प्रभावी बनाता है, बल्कि विद्यार्थियों के समग्र विकास में भी सहायक होता है। अतः शिक्षकों के दृष्टिकोण को सकारात्मक बनाने के लिए निरंतर प्रयास आवश्यक हैं।शिक्षकों का शैक्षिक दृष्टिकोण उनके शिक्षण व्यवहार, कक्षा प्रबंधन एवं छात्रों के समग्र विकास को प्रभावित करता है। वहीं, कार्य संतुष्टि शिक्षक की प्रेरणा, कार्यक्षमता और संस्थागत प्रतिबद्धता को निर्धारित करती है। इन दोनों के मध्य संबंध शिक्षा की गुणवत्ता को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के शैक्षिक दृष्टिकोण एवं कार्य संतुष्टि के मध्य संबंध का समीक्षात्मक विश्लेषण करना है। यह एक समीक्षात्मक अध्ययन है जिसमें विभिन्न शोध पत्रों, जर्नल लेखों एवं रिपोर्ट्स का विश्लेषण किया गया। डेटा संग्रह हेतु **Google Scholar, ERIC** एवं **Shodhganga** जैसे डेटाबेस का उपयोग किया गया। चयन हेतु **2015** के बाद प्रकाशित प्रासंगिक अध्ययनों को शामिल किया गया।

अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि सकारात्मक शैक्षिक दृष्टिकोण रखने वाले शिक्षक अधिक कार्य संतुष्टि अनुभव करते हैं। इसके अतिरिक्त, कार्य परिवेश, प्रशासनिक सहयोग एवं वेतन जैसी कारक भी इस संबंध को प्रभावित करते हैं। शैक्षिक दृष्टिकोण और कार्य संतुष्टि के मध्य सकारात्मक एवं महत्वपूर्ण संबंध पाया गया। अतः शिक्षकों के दृष्टिकोण में सुधार हेतु प्रशिक्षण एवं सहयोगात्मक वातावरण आवश्यक है। शिक्षक शिक्षा व्यवस्था की धुरी होते हैं। उनका शैक्षिक दृष्टिकोण न केवल उनके शिक्षण कार्य को प्रभावित करता है, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, सीखने की प्रक्रिया और विद्यालय के समग्र वातावरण को भी आकार देता है। सकारात्मक शैक्षिक दृष्टिकोण शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता काफी हद तक शिक्षकों की सोच, दृष्टिकोण तथा उनके कार्य से संतुष्टि पर निर्भर करती है।

कुंजी शब्द- शैक्षिक दृष्टिकोण, कार्य संतुष्टि , माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक |

प्रस्तावना

शिक्षा में शिक्षक की भूमिका:

शिक्षा प्रणाली में शिक्षक का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। शिक्षक न केवल ज्ञान का संचार करते हैं, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, मूल्यबोध और सामाजिक व्यवहार के निर्माण में भी केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। माध्यमिक स्तर पर शिक्षक विद्यार्थियों के बौद्धिक एवं भावनात्मक विकास के मार्गदर्शक होते हैं, इसलिए उनकी सोच, दृष्टिकोण और कार्य के प्रति संतुष्टि शिक्षा की गुणवत्ता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।

शैक्षिक दृष्टिकोण का महत्व:

शैक्षिक दृष्टिकोण से आशय शिक्षक की शिक्षा, शिक्षण प्रक्रिया, विद्यार्थियों एवं विद्यालयी वातावरण के प्रति मानसिकता से है। सकारात्मक शैक्षिक दृष्टिकोण शिक्षक को नवाचार अपनाने, प्रभावी शिक्षण विधियों का उपयोग करने तथा विद्यार्थियों के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है। इसके विपरीत, नकारात्मक दृष्टिकोण शिक्षण की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है।

कार्य संतुष्टि की भूमिका:
कार्य संतुष्टि वह स्थिति है जिसमें शिक्षक अपने कार्य, कार्यस्थल, वेतन, पदोन्नति, सहकर्मियों एवं प्रशासन से संतुष्टि अनुभव करते हैं। उच्च कार्य संतुष्टि से शिक्षक अधिक समर्पित, प्रेरित और उत्पादक बनते हैं, जबकि असंतुष्टि से तनाव, कार्य में अरुचि एवं प्रदर्शन में कमी देखी जा सकती है।

दोनों के संबंध की आवश्यकता:
शैक्षिक दृष्टिकोण और कार्य संतुष्टि के मध्य गहरा संबंध होता है। सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले शिक्षक सामान्यतः अपने कार्य से अधिक संतुष्ट होते हैं, जबकि उच्च कार्य संतुष्टि भी शिक्षक के दृष्टिकोण को सकारात्मक बनाती है। इन दोनों के परस्पर संबंध को समझना शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने के लिए आवश्यक है।

समीक्षा करने का औचित्य :
वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली में निरंतर परिवर्तन हो रहे हैं, जैसे नई शिक्षण पद्धतियाँ, तकनीकी संसाधनों का उपयोग एवं नीतिगत सुधार। ऐसे में शिक्षकों के शैक्षिक दृष्टिकोण एवं कार्य संतुष्टि के संबंध का समीक्षात्मक अध्ययन आवश्यक हो जाता है, ताकि नीति-निर्माताओं, प्रशासकों एवं शिक्षकों को इस दिशा में उचित निर्णय लेने में सहायता मिल सके तथा शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाया जा सके।

अध्ययन के उद्देश्य

1. **माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के शैक्षिक दृष्टिकोण से संबंधित उपलब्ध शोधों का विश्लेषण करना।**
   इस उद्देश्य के अंतर्गत विभिन्न शोध अध्ययनों, जर्नल लेखों एवं रिपोर्ट्स का अध्ययन कर यह समझना है कि शिक्षकों का शैक्षिक दृष्टिकोण किन-किन कारकों से प्रभावित होता है तथा इसका शिक्षण-प्रक्रिया पर क्या प्रभाव पड़ता है।

2. **शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पर किए गए विभिन्न अध्ययनों की समीक्षा करना।**
   इसमें यह विश्लेषण किया जाएगा कि कार्य संतुष्टि के प्रमुख निर्धारक क्या हैं, जैसे—वेतन, कार्य परिवेश, प्रशासनिक सहयोग, पदोन्नति के अवसर आदि, तथा ये कारक शिक्षकों के कार्य निष्पादन को कैसे प्रभावित करते हैं।

3. **शिक्षकों के शैक्षिक दृष्टिकोण एवं कार्य संतुष्टि के मध्य संबंध को समझना** -इस उद्देश्य के अंतर्गत यह अध्ययन किया जाएगा कि सकारात्मक या नकारात्मक शैक्षिक दृष्टिकोण किस प्रकार कार्य संतुष्टि को प्रभावित करता है तथा दोनों के बीच किस प्रकार का सहसंबंध पाया जाता है।

4. **उपलब्ध साहित्य के आधार पर रिसर्च गैप की पहचान करना।**
5. इस उद्देश्य का लक्ष्य यह है कि पूर्ववर्ती अध्ययनों में किन पहलुओं पर पर्याप्त शोध नहीं हुआ है, जैसे—क्षेत्रीय अंतर, लिंग आधारित तुलना, सरकारी एवं निजी विद्यालयों के बीच अंतर आदि, ताकि भविष्य के शोध के लिए नई दिशा निर्धारित की जा सके।

शोध विधि

(i) समीक्षा का प्रकार:
इस अध्ययन में सिस्टमैटिक रिव्यू पद्धति का उपयोग किया गया है। इस पद्धति के अंतर्गत पूर्व प्रकाशित शोधों का व्यवस्थित, वस्तुनिष्ठ एवं क्रमबद्ध विश्लेषण किया जाता है, जिससे विषय से संबंधित समग्र एवं विश्वसनीय निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकें।

(ii) स्रोत:
अध्ययन हेतु विभिन्न विश्वसनीय शैक्षिक डेटाबेस एवं ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से शोध सामग्री एकत्रित की गई, जिनमें प्रमुख हैं:

- Google Scholar
- ERIC (Education Resources Information Center)
- Shodhganga
- ResearchGate

(iii) समावेशन मापदंड:
इस समीक्षा में निम्नलिखित मानदंडों के आधार पर शोधों का चयन किया गया:

- वर्ष 2015 से 2025 के बीच प्रकाशित शोध
- शिक्षक-आधारित अध्ययन (विशेष रूप से माध्यमिक विद्यालय स्तर)
- शैक्षिक दृष्टिकोण (Educational Attitude) एवं/या कार्य संतुष्टि (Job Satisfaction) पर केंद्रित अध्ययन

- पूर्ण शोध-पत्र (Full-text) उपलब्ध होना

(iv) बहिष्करण मापदंड:
निम्नलिखित प्रकार के शोधों को समीक्षा से बाहर रखा गया:
- विषय से असंबंधित अध्ययन
- डुप्लीकेट शोध-पत्र
- अपूर्ण जानकारी या अधूरी रिपोर्ट वाले अध्ययन
- ऐसे अध्ययन जिनमें स्पष्ट रूप से उद्देश्यों या निष्कर्षों का उल्लेख नहीं था

इस प्रकार, निर्धारित मानदंडों के आधार पर चयनित अध्ययनों का विश्लेषण कर विश्वसनीय एवं प्रासंगिक निष्कर्ष प्राप्त किए गए।

साहित्य समीक्षा

पाल एवं अन्य (2025) के अध्ययन से पता चलता है कि मानसिक रूप से स्वस्थ शिक्षक न केवल अपने करियर के विकास के लिए लाभकारी होते हैं, बल्कि छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षणिक उपलब्धि के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। अतः, शिक्षकों के मनोवैज्ञानिक कल्याण का आकलन संस्थागत वातावरण में उनकी संतुष्टि, छात्रों की मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं को समझने की क्षमता और अनेक मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे छात्रों की सहायता करने की उनकी व्यावसायिक तत्परता के आधार पर किया जा सकता है । यदि शिक्षकों के कल्याण की उपेक्षा की जाती है, तो यह छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के समाधान की उनकी क्षमता को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है। इसके अतिरिक्त, यह छात्रों की समस्याओं को हल करने की उनकी तत्परता और क्षमता को भी कम करता है, जिसके परिणामस्वरूप कक्षा में शिक्षकों और छात्रों के बीच भावनात्मक तनाव उत्पन्न होता है रमेश उत्पल (2024) ने शिक्षक-छात्र संबंध और छात्रों के प्रदर्शन पर इसके प्रभाव पर चर्चा की। परिणामों से पता चला कि शिक्षकों का कल्याण छात्रों के सीखने के साथ-साथ उनके कार्य प्रदर्शन से भी सकारात्मक रूप से संबंधित है |

विक्रम प्रातप एवं अन्य ने (2023) मे यह भी सुझाव दिया गया है कि बेहतर स्वास्थ्य वाले शिक्षक कक्षा में छात्रों के अनुचित व्यवहार के जोखिम को कम करने में मदद कर सकते हैं |

अन्य शोधकर्ताओं ने छात्रों की उपलब्धि पर विद्यालय के माहौल के सकारात्मक संबंध का पता लगाया है (जमुना प्रसाद , 2024)। वे बताते है कि एक शिक्षक की खुशी कक्षा में छात्रों के संतोषजनक प्रदर्शन से जुड़ी होती है, जो छात्रों के सीखने को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है |

पवन कुमार श्रीवास्तव (2023) के अनुसार , एक शिक्षक के व्यक्तिपरक स्वास्थ्य का संबंध नौकरी की संतुष्टि से है। जो शिक्षक अपनी नौकरी से संतुष्ट होते हैं, वे अपने जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, उनका कार्यकाल लंबा होता है और वे अनुकूलनशील होते हैं|

सीमा साहनी ,रानी कपूर एवं महरब्बा (2022)के अध्ययन में स्कूली शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि और खुशहाली के बीच सकारात्मक संबंध का अध्ययन किया है। उदाहरण के लिए, नॉर्वे में किए गए एक अध्ययन में शिक्षकों की खुशहाली और उनकी सहभागिता एवं प्रेरणा के बीच संबंध की जाँच की गई, जिसमें पाया गया कि शिक्षकों की खुशहाली उनकी उच्च नौकरी सहभागिता और पेशे को छोड़ने की कम प्रेरणा का पूर्वानुमान लगाती है ।

दक्षिण अफ्रीका में किए गए शोधकर्ताओं के एक दल ने (2021) मे शिक्षकों की खुशहाली, उनके प्रदर्शन और स्कूलों में उनकी प्रतिबद्धता का आकलन करने के लिए एक अन्य अध्ययन किया गया। अध्ययन के परिणामों ने खुशहाली और नौकरी की संतुष्टि के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध दर्शाए गए । जो कि , शिक्षण वातावरण छात्रों के मनो-शैक्षिक विकास और विद्यालय में समायोजन का एक संकेतक है|

राजहंस (2020) ने बताया कि शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि में लिंग की भूमिका महत्वपूर्ण है, जबकि अन्य शोधकर्ताओं ने विरोधाभासी परिणाम बताए हैं, अर्थात् माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए नौकरी की संतुष्टि में लिंग भेद महत्वपूर्ण नहीं था|

क्रैनी, सी., स्मिथ, पी., और स्टोन, ई.(2019) ने शैक्षिक दृष्टिकोण और कार्य संतुष्टि से संबंधित अपने अध्ययन मे पाया कि सीखने के वातावरण में एक स्कूल या कक्षा की संस्कृति भी शामिल होती है, जिसमें इसके लोकाचार और विशेषताएं भी शामिल होती हैं, साथ ही व्यक्ति एक-दूसरे के साथ कैसे बातचीत करते हैं और व्यवहार करते हैं, साथ ही शिक्षक किस तरह से सीखने की सुविधा के लिए शैक्षिक सेटिंग का आयोजन कर सकते हैं, जैसे कि प्रासंगिक प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र में कक्षाएं संचालित करना, विशिष्ट तरीकों से

डेस्क का समूह बनाना, दीवारों को शिक्षण सामग्री से सजाना, या ऑडियो, विजुअल और डिजिटल प्रौद्योगिकियों का उपयोग करना। स्कूल के नियमों, शासन संरचनाओं और अन्य पहलुओं को भी सीखने के वातावरण का हिस्सा माना जा सकता है क्योंकि सीखने के वातावरण के गुण और विशेषताएं परिस्थितियों की एक विस्तृत श्रृंखला से प्रभावित होती हैं।

कूपर एंड शिंडलर (2018) ने शैक्षिक दृष्टिकोण और कार्य संतुष्टि से संबंधित अपने अध्ययन मे उल्लेखित किया कि पर्यावरण शब्द उस परिवेश और स्थितियों की समग्रता को दर्शाता है जिसमें कुछ या कोई व्यक्ति रहता है या कार्य करता है। सीखने के वातावरण के बारे में चर्चा एक भौतिक स्थान, एक आभासी समकक्ष, या कम से कम संगठनात्मक सिद्धांतों के एक सेट से शुरू होती है जिनकी उत्पत्ति पारंपरिक रूप से अंतरिक्ष-प्रभावित मॉडल में हुई थी। चाहे एक कक्षा हो, एक आभासी डोमेन में एक द्वीप, या एक शिक्षण प्रबंधन प्रणाली (एलएमएस) में एक चौट रूम, यह मुख्य स्थान अन्य स्थानों और संसाधनों से कनेक्शन की सुविधा प्रदान करता है। ये सीखने के अन्य स्थान हो सकते हैं, लेकिन ये शैक्षिक जगत से बाहर भी होने की संभावना है। उदाहरण के लिए, वित्त में एक वर्ग में स्टॉक-ट्रेडिंग फ़्लोर से वास्तविक समय का कनेक्शन शामिल हो सकता है।

चरणथिमठ, ए.आर. (2017) ने अपने अध्ययन मे बताया कि सीखने के वातावरण में सुविधाओं का एक विस्तृत समूह शामिल होता है जो सीखने को प्रभावित करते हैं। सीखने के वातावरण का विचार एक ऐसी सेटिंग का तात्पर्य है जहां इरादे और डिजाइन हर चीज के लिए जिम्मेदार नहीं हो सकते हैं; कुछ तत्व नियंत्रण से बच जाते हैं या कम से कम अनपेक्षित होते हैं। तो, पर्यावरण जानबूझकर और आकस्मिक, योजनाबद्ध और अप्रत्याशित घटनाओं का संयोजन है। कुछ हद तक, पारंपरिक कक्षाओं में पारंपरिक शिक्षण इस गतिशीलता का समर्थन कर सकता है - छात्रों को ऐसे दिशा-निर्देश लेने के लिए असाइनमेंट दिए जा सकते हैं जो निपुणता के साथ-साथ कल्पना और रचनात्मकता भी दिखाते हैं।

भाटिया एवं तारेश (2016) के अध्ययन मे विद्यार्थियों की अलग-अलग ज़रूरतों को पूरा करने और अधिक लोगों के लिए व्यावसायिक विकल्पों की एक विस्तृत श्रृंखला खोलने के लिए, सुधार के कुछ प्रस्तावों में स्कूलों, कॉलेजों और कार्यस्थलों के बीच आज की तुलना में कहीं अधिक बड़े पैमाने पर सहयोग का अनुमान लगाया गया है। यदि इस महत्वाकांक्षा को हासिल करना है तो नीतिगत लीवर, फंडिंग और समर्थन सभी को एक साथ लाने की जरूरत है। सहयोग महंगा है, जबकि अन्य नीतियां और प्रदर्शन तालिकाओं का अस्तित्व जैसे कारक स्कूलों और कॉलेजों के बीच प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने का काम कर सकते हैं। पिछले 30 वर्षों के दौरान सीखने के वातावरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि, विविधीकरण और अंतर्राष्ट्रीयकरण हुआ है।

विश्लेषण एवं संश्लेषण (Analysis & Synthesis)
साहित्य समीक्षा के आधार पर विभिन्न अध्ययनों के निष्कर्षों का समेकित विश्लेषण निम्नलिखित बिंदुओं में प्रस्तुत किया जा सकता है—

समानताएँ

अधिकांश शोधों में यह समान रूप से पाया गया कि शिक्षकों का शैक्षिक दृष्टिकोण एवं कार्य संतुष्टि परस्पर सकारात्मक रूप से संबंधित हैं। सकारात्मक शैक्षिक दृष्टिकोण रखने वाले शिक्षक अपने कार्य में अधिक रुचि, समर्पण एवं संतुष्टि प्रदर्शित करते हैं।इसके अतिरिक्त, कार्य वातावरण, प्रशासनिक सहयोग, वेतन एवं व्यावसायिक विकास के अवसर दोनों ही कारकों को प्रभावित करने वाले सामान्य तत्व के रूप में सामने आते हैं। अधिकांश अध्ययनों में यह भी पाया गया कि शिक्षक का अनुभव एवं प्रशिक्षण उनके दृष्टिकोण और संतुष्टि दोनों को सुदृढ़ बनाता है।

विरोधाभास
कुछ अध्ययनों में यह विरोधाभास पाया गया कि सकारात्मक शैक्षिक दृष्टिकोण के बावजूद कार्य संतुष्टि का स्तर निम्न हो सकता है, विशेषकर तब जब कार्य परिस्थितियाँ प्रतिकूल हों (जैसे—अधिक कार्यभार, कम वेतन, प्रशासनिक दबाव)। इसी प्रकार, कुछ मामलों में उच्च कार्य संतुष्टि के बावजूद शिक्षकों का दृष्टिकोण अत्यधिक नवाचारी या छात्र-केंद्रित नहीं पाया गया, जो यह दर्शाता है कि दोनों के बीच संबंध हमेशा प्रत्यक्ष या समानुपाती नहीं होता।

सरकारी एवं निजी विद्यालयों के संदर्भ में भी मिश्रित परिणाम देखने को मिलते हैं, जिससे स्पष्ट होता है कि संदर्भगत कारक इस संबंध को प्रभावित करते हैं।

नए रुझान / प्रवृत्तियाँ

हाल के वर्षों में यह प्रवृत्ति उभरकर सामने आई है कि डिजिटल शिक्षा, ICT के उपयोग एवं नवीन शिक्षण पद्धतियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले शिक्षक अधिक संतुष्टि अनुभव करते हैं। इसके साथ ही, *Professional Development Programs*, प्रशिक्षण

कार्यशालाएँ एवं शिक्षक सशक्तिकरण योजनाएँ दोनों—शैक्षिक दृष्टिकोण एवं कार्य संतुष्टि—को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इसके अतिरिक्त, समावेशी शिक्षा , भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं कार्य-जीवन संतुलन जैसे नए आयाम भी इस संबंध को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक के रूप में उभर रहे हैं।

इस प्रकार, विश्लेषण एवं संश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि शैक्षिक दृष्टिकोण एवं कार्य संतुष्टि के मध्य संबंध जटिल, बहुआयामी एवं संदर्भ-निर्भर है, जिसे विभिन्न व्यक्तिगत एवं संस्थागत कारकों के संदर्भ में समझना आवश्यक है।

शोध अंतर

साहित्य समीक्षा के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि यद्यपि शिक्षकों के शैक्षिक दृष्टिकोण एवं कार्य संतुष्टि पर अनेक अध्ययन किए गए हैं, फिर भी कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में शोध की कमी विद्यमान है।

किन क्षेत्रों में कमी है (Areas Lacking Research)

- अधिकांश अध्ययन सामान्य शिक्षकों पर केंद्रित हैं, जबकि **माध्यमिक स्तर के शिक्षकों** पर विशेष रूप से सीमित शोध उपलब्ध हैं।
- ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के बीच तुलनात्मक अध्ययन पर्याप्त नहीं हैं।
- ICT आधारित शिक्षण एवं डिजिटल वातावरण के संदर्भ में शैक्षिक दृष्टिकोण और कार्य संतुष्टि के संबंध पर सीमित अध्ययन हुए हैं।
- दीर्घकालिक (Longitudinal) अध्ययन की कमी है, जिससे समय के साथ होने वाले परिवर्तनों को समझा जा सके।

किन चरों पर काम नहीं हुआ (Under-researched Variables)

- **भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence)** और उसका प्रभाव
- **कार्य-जीवन संतुलन (Work-Life Balance)**
- **शिक्षक तनाव (Teacher Stress) एवं बर्नआउट (Burnout)**
- **प्रौद्योगिकी उपयोग (Technology Integration)** का प्रभाव
- **नेतृत्व शैली (Leadership Style)** एवं विद्यालय प्रबंधन का प्रभाव
- **लिंग, अनुभव एवं विषय-विशेष (Subject specialization)** के संदर्भ में गहन विश्लेषण की कमी

सरकारी व निजी विद्यालयों पर प्रमुख रिसर्च गैप

1. मिश्रित परिणामों का गैप

- कुछ अध्ययनों में सरकारी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि अधिक पाई गई
- जबकि कुछ में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं मिला
  इन विरोधाभासी परिणामों को स्पष्ट करने के लिए अधिक गहन और शोध की आवश्यकता है।

2. क्षेत्रीय विविधता का अभाव

- अधिकांश अध्ययन सीमित क्षेत्रों (जैसे राजस्थान, चंडीगढ़, असम तक सीमित है
- विभिन्न राज्यों विशेषकर उत्तर प्रदेश, ग्रामीण बनाम शहरी में तुलनात्मक अध्ययन कम हैं
- राष्ट्रीय स्तर पर समग्र अध्ययन का अभाव

3. शैक्षिक दृष्टिकोण पर सीमित अध्ययन

- अधिकांश शोध केवल **कार्य संतुष्टि** पर केंद्रित हैं
- शैक्षिक दृष्टिकोण + कार्य संतुष्टि का संयुक्त अध्ययन बहुत कम है
- विशेषकर सरकारी v/s निजी विद्यालयों में इस संबंध का विश्लेषण कम हुआ है

4. अन्य मनोवैज्ञानिक चर का अभाव

अधिकांश शोध केवल निम्न कारकों तक सीमित हैं:

- वेतन
- कार्य वातावरण
- अनुभव
  निम्न नए चर शामिल करने की आवश्यकता है:

- तनाव
- अभिप्रेरणा
- कार्य-दबाव (
- बर्नआउट

5. दीर्घकालिक (Longitudinal) अध्ययन का अभाव
- अधिकांश अध्ययन cross-sectional (एक समय पर) हैं
- समय के साथ शिक्षकों के दृष्टिकोण और संतुष्टि में परिवर्तन पर शोध नहीं हुआ

6. निजी विद्यालयों की विविधता पर कम ध्यान
- निजी विद्यालयों को एक ही श्रेणी में लिया जाता है
- CBSE, ICSE, State board के अंतर का विश्लेषण कम

7. शिक्षण परिणाम से संबंध का अभाव
- शोध मुख्यतः शिक्षक तक सीमित है
- शिक्षक की संतुष्टि और छात्रों के परिणामों के बीच संबंध कम अध्ययन हुआ
- जबकि वास्तविकता में सरकारी और निजी स्कूलों में सीखने का अंतर देखा गया है

8. नीतिगत विश्लेषण का अभाव
सरकारी योजनाओं (जैसे NEP 2020) का प्रभाव सरकारी v/s निजी विद्यालयों पर तुलनात्मक रूप से कम अध्ययन किया गया है

9. तकनीकी एवं डिजिटल अंतर
- ICT उपयोग, ऑनलाइन शिक्षण, डिजिटल संसाधनों का तुलनात्मक अध्ययन सीमित है
- विशेषकर ग्रामीण सरकारी v/s निजी विद्यालयों में

10. गुणात्मक शोध की कमी
- अधिकतर शोध मात्रात्मक हैं
- इंटरव्यू, केस स्टडी, अनुभव आधारित अध्ययन बहुत कम हैं

सरकारी और निजी विद्यालयों पर काफी शोध होने के बावजूद निम्न प्रमुख गैप स्पष्ट हैं:
- संयुक्त अध्ययन की कमी
- नए मनोवैज्ञानिक चर का अभाव
- क्षेत्रीय व दीर्घकालिक अध्ययन की कमी
- नीतिगत एवं डिजिटल पहलुओं का सीमित विश्लेषण

इसलिए आपका शोध (जैसे "शैक्षिक दृष्टिकोण एवं कार्य संतुष्टि") इन गैप्स को भरने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

भारतीय संदर्भ में कमी (Gaps in Indian Context)
- भारत में अधिकांश अध्ययन सीमित क्षेत्रों या राज्यों तक ही केंद्रित हैं, जिससे **राष्ट्रीय स्तर पर सामान्यीकरण** कठिन हो जाता है।
- सरकारी, निजी एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों के बीच व्यापक तुलनात्मक अध्ययन की कमी है।
- **नई शिक्षा नीति (NEP 2020)** के संदर्भ में शिक्षकों के दृष्टिकोण एवं संतुष्टि पर पर्याप्त शोध उपलब्ध नहीं हैं।
- भारतीय सांस्कृतिक, सामाजिक एवं संस्थागत कारकों के प्रभाव का समग्र विश्लेषण अभी भी सीमित है।

इस प्रकार, भविष्य के शोध में इन क्षेत्रों एवं चर पर ध्यान केंद्रित कर अधिक व्यापक, संदर्भ-आधारित एवं उपयोगी निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकते हैं।

विचार (DISCUSSION)

समीक्षात्मक अध्ययन के अंतर्गत प्राप्त निष्कर्षों की व्याख्या, उनके सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक महत्व को निम्नलिखित बिंदुओं में प्रस्तुत किया जा सकता है—

निष्कर्षों की व्याख्या

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के शैक्षिक दृष्टिकोण एवं कार्य संतुष्टि के मध्य सामान्यतः सकारात्मक संबंध पाया जाता है। जिन शिक्षकों का शैक्षिक दृष्टिकोण सकारात्मक, नवाचारी एवं छात्र-केंद्रित होता है, वे अपने कार्य से अधिक संतुष्टि अनुभव करते हैं। हालाँकि, यह संबंध पूर्णतः प्रत्यक्ष नहीं है, क्योंकि कई बाह्य कारक जैसे—कार्य वातावरण, वेतन, प्रशासनिक समर्थन एवं कार्यभार इस संबंध को प्रभावित करते हैं। कुछ मामलों में यह भी पाया गया कि प्रतिकूल परिस्थितियों में सकारात्मक दृष्टिकोण के बावजूद कार्य संतुष्टि कम हो सकती है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह संबंध बहुआयामी एवं संदर्भ-निर्भर है।

सैद्धांतिक महत्व

यह अध्ययन शैक्षिक मनोविज्ञान एवं संगठनात्मक व्यवहार के सिद्धांतों को सुदृढ़ करता है, जिनमें यह माना जाता है कि व्यक्ति का दृष्टिकोण उसके व्यवहार एवं संतुष्टि को प्रभावित करता है। यह अध्ययन इस धारणा को पुष्ट करता है कि शिक्षकों का सकारात्मक दृष्टिकोण न केवल उनके व्यक्तिगत विकास बल्कि संस्थागत प्रभावशीलता को भी बढ़ाता है। साथ ही, यह अध्ययन भविष्य के शोध के लिए एक सैद्धांतिक ढांचा प्रदान करता है, जिसमें विभिन्न मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक कारकों के अंतर्संबंध का विश्लेषण किया जा सकता है।

व्यावहारिक महत्व

इस अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षा नीति निर्माताओं, विद्यालय प्रशासकों एवं शिक्षकों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं।

- विद्यालयों में सकारात्मक कार्य वातावरण एवं सहयोगात्मक संस्कृति विकसित करने की आवश्यकता है।
- शिक्षकों के लिए नियमित प्रशिक्षण, कार्यशालाएँ एवं व्यावसायिक विकास कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।
- उचित वेतन, पदोन्नति एवं मान्यता की व्यवस्था से कार्य संतुष्टि को बढ़ाया जा सकता है।
- प्रशासनिक स्तर पर शिक्षक-हितैषी नीतियाँ अपनाकर उनके दृष्टिकोण एवं संतुष्टि दोनों को सुदृढ़ किया जा सकता है।

इस प्रकार, यह अध्ययन न केवल सैद्धांतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि व्यावहारिक स्तर पर भी शिक्षा प्रणाली में सुधार हेतु महत्वपूर्ण दिशा प्रदान करता है।

शैक्षिक निहितार्थ

समीक्षात्मक अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर शिक्षा के विभिन्न आयामों में निम्नलिखित महत्वपूर्ण निहितार्थ सामने आते हैं—

शिक्षक प्रशिक्षण में सुधार

- शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में **सकारात्मक शैक्षिक दृष्टिकोण** के विकास पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।
- प्रशिक्षण में नवाचारपूर्ण शिक्षण विधियाँ, ICT का उपयोग, समावेशी शिक्षा एवं कक्षा प्रबंधन कौशल को शामिल किया जाए।
- **In-service training** एवं निरंतर व्यावसायिक विकास को प्रोत्साहित किया जाए, जिससे शिक्षकों की दक्षता एवं आत्मविश्वास में वृद्धि हो।
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं तनाव प्रबंधन जैसे पहलुओं को भी प्रशिक्षण का हिस्सा बनाया जाए।

विद्यालय प्रबंधन के लिए सुझाव

- विद्यालयों में **सहयोगात्मक एवं सकारात्मक कार्य वातावरण** का निर्माण किया जाए।
- शिक्षकों के कार्य की सराहना एवं उचित मान्यता (Recognition) प्रदान की जाए।
- प्रशासनिक सहयोग, स्पष्ट संचार एवं सहभागितापूर्ण नेतृत्व (Participative Leadership) को बढ़ावा दिया जाए।
- कार्यभार का संतुलन बनाए रखते हुए शिक्षकों को निर्णय-निर्माण प्रक्रिया में शामिल किया जाए।
- आवश्यक संसाधनों (जैसे—शिक्षण सामग्री, ICT उपकरण) की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।

नीति निर्माण में उपयोग

- शिक्षा नीतियों में शिक्षकों की **कार्य संतुष्टि एवं दृष्टिकोण सुधार** को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
- सरकार द्वारा ऐसी योजनाएँ बनाई जाएँ जो शिक्षक कल्याण, उचित वेतन, पदोन्नति एवं सुरक्षा सुनिश्चित करें।
- **नई शिक्षा नीति (NEP 2020)** के प्रभावी क्रियान्वयन में शिक्षकों की भूमिका को सुदृढ़ करने हेतु विशेष प्रावधान किए जाएँ।
- शिक्षक सशक्तिकरण, प्रशिक्षण एवं प्रेरणा से संबंधित दीर्घकालिक नीतियाँ विकसित की जाएँ।

इस प्रकार, इन शैक्षिक निहितार्थों के माध्यम से शिक्षकों के शैक्षिक दृष्टिकोण एवं कार्य संतुष्टि में सुधार कर संपूर्ण शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता को सुदृढ़ किया जा सकता है।

भविष्य के लिए सुझाव
भविष्य के लिए निम्नलिखित तीन प्रमुख सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं—

1. प्रयोगात्मक शोध के संबंध में सुझाव
- भविष्य में केवल सहसंबंधात्मक अध्ययन तक सीमित न रहकर प्रयोगात्मक शोध डिज़ाइन अपनाए जाएँ।
- शिक्षकों के शैक्षिक दृष्टिकोण में सुधार हेतु विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएँ, या हस्तक्षेप (intervention) तैयार कर उनके प्रभाव का परीक्षण किया जाए।
- नियंत्रण समूह (control group) और प्रायोगिक समूह (experimental group) बनाकर यह देखा जाए कि हस्तक्षेप से कार्य संतुष्टि में वास्तविक परिवर्तन आता है या नहीं।
- इससे कारण-प्रभाव (cause-effect) संबंध अधिक स्पष्ट रूप से स्थापित किया जा सकेगा।

2. लॉन्गिट्यूडिनल शोध (Longitudinal Research) के संबंध में सुझाव
- शिक्षकों के शैक्षिक दृष्टिकोण और कार्य संतुष्टि समय के साथ कैसे बदलते हैं, इसे समझने के लिए दीर्घकालिक (longitudinal) अध्ययन किए जाएँ।
- एक ही शिक्षकों के समूह को कई वर्षों तक ट्रैक करके उनके दृष्टिकोण, अनुभव, और संतुष्टि स्तर में परिवर्तन का अध्ययन किया जाए।
- इससे यह ज्ञात किया जा सकेगा कि अनुभव, सेवा अवधि, पदोन्नति, या नीतिगत बदलावों का इन चर पर क्या प्रभाव पड़ता है।
- इस प्रकार के अध्ययन से शिक्षा नीति निर्माण और शिक्षक विकास कार्यक्रमों के लिए अधिक विश्वसनीय निष्कर्ष प्राप्त होंगे।

3. नए चर जोड़ने के संबंध में सुझाव (जैसे तनाव और अभिप्रेरणा)
- भविष्य के शोध में केवल शैक्षिक दृष्टिकोण और कार्य संतुष्टि तक सीमित न रहकर अन्य मनोवैज्ञानिक एवं व्यावसायिक चर जोड़े जाएँ।
- **तनाव (Stress)**: यह देखा जाए कि कार्य संबंधी तनाव शिक्षकों की संतुष्टि और दृष्टिकोण को किस प्रकार प्रभावित करता है।
- **अभिप्रेरणा (Motivation)**: आंतरिक (intrinsic) और बाह्य (extrinsic) अभिप्रेरणा का शिक्षकों के दृष्टिकोण एवं संतुष्टि पर प्रभाव अध्ययन किया जाए।
- अन्य संभावित चर जैसे—कार्य वातावरण, नेतृत्व शैली, वेतन संतुष्टि, आत्म-प्रभावकारिता (self-efficacy) आदि भी शामिल किए जा सकते हैं।
- बहु-चर (multivariate) विश्लेषण द्वारा अधिक व्यापक और गहन निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकते हैं।

निष्कर्ष

इस समीक्षात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का **शैक्षिक दृष्टिकोण** एवं **कार्य संतुष्टि** शिक्षा की गुणवत्ता के दो अत्यंत महत्वपूर्ण एवं परस्पर संबंधित आयाम हैं। विभिन्न शोधों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि जिन शिक्षकों का दृष्टिकोण सकारात्मक, नवाचारी एवं छात्र-केंद्रित होता है, वे अपने कार्य से अधिक संतुष्टि अनुभव करते हैं। साथ ही, कार्य संतुष्टि केवल व्यक्तिगत कारकों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि यह **कार्य वातावरण, प्रशासनिक सहयोग, वेतन, प्रशिक्षण एवं व्यावसायिक विकास के अवसरों** जैसे संस्थागत कारकों से भी प्रभावित होती है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि यह संबंध सरल एवं प्रत्यक्ष न होकर **बहुआयामी और संदर्भ-निर्भर** है, जिसमें व्यक्तिगत, सामाजिक एवं संगठनात्मक कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

पूरे लेख का मुख्य संदेश
इस अध्ययन का मुख्य संदेश यह है कि—

शिक्षकों के शैक्षिक दृष्टिकोण और कार्य संतुष्टि के बीच सकारात्मक संबंध स्थापित करके ही शिक्षा की गुणवत्ता में वास्तविक सुधार किया जा सकता है।

अतः आवश्यक है कि:
- शिक्षकों के लिए **सकारात्मक एवं सहयोगात्मक कार्य वातावरण** तैयार किया जाए
- **प्रशिक्षण, प्रेरणा एवं सशक्तिकरण** को बढ़ावा दिया जाए
- **नीतिगत स्तर पर शिक्षक कल्याण** को प्राथमिकता दी जाए

क्योंकि जब शिक्षक संतुष्ट और सकारात्मक दृष्टिकोण वाले होते हैं, तभी वे प्रभावी शिक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

संदर्भ सूची

[1]. मिचेल ,एस (2022),सेकेंडरी स्कूल के टीचर्स की जॉब सैटिस्फैक्शन और टीचिंग प्रोफेशन के प्रति उनके रवैये के बीच संबंध। AsTEN जर्नल ऑफ़ टीचर एजुकेशन, 5(1).
[2]. दत्त एवं राजन (2023), हायर सेकेंडरी टीचर्स की जॉब सैटिस्फैक्शन, टीचिंग के प्रति उनके रवैये के संबंध में। International Journal of Health Sciences, 6(S6), 2172–2183.
[3]. किशोर ,बाला एम सुंदरन (2024), टीचर स्ट्रेस और सैटिस्फैक्शन। एजुकेशनल रिसर्च, 21(2), 89–96.
[4]. कहकशा एवं रुक्मणी (2015). टीचर की जॉब सैटिस्फैक्शन और इसे प्रभावित करने वाले फैक्टर्स की एक स्टडी। चाइनीज एजुकेशन एंड सोसाइटी, 40(5), 47–64.
[5]. जगदीश , एम., और पापरिकॉर्न , ई. (2016). पब्लिक और प्राइवेट स्कूल टीचर्स के बीच जॉब सैटिस्फैक्शन में अंतर, कॉजेंट एजुकेशन,संस्करण 10 अंक 6 83-89।
[6]. यान, टी., टीओ, ई. डब्ल्यू., लिम, बी. एच., और लिन, बी. (2017). फिजिकल एजुकेशन टीचर्स के बीच पॉजिटिव ह्यूमन साइकोलॉजी द्वारा कॉम्पिटेंसी और जॉब सैटिस्फैक्शन का इवैल्यूएशन। फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी, अंक 20 इशू 4 ,109-114
[7]. बाबू, पी. एस., और नेफा, जी. ए. (2018). हाई स्कूल टीचर्स के बीच सेल्फ-इफिकेसी और पर्सनल स्ट्रेन के फंक्शन के तौर पर जॉब सैटिस्फैक्शन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च रिव्यू, 7(4), 268–279.
[8]. थानी, एस. (2019). जॉब सैटिस्फैक्शन के बारे में टीचरों की सोच और उनके प्रोफेशनल डेवलपमेंट के बीच संबंध की एक स्टडी। स्कॉलर: ह्यूमन साइंसेज।
[9]. अज़ीरी, बी. (2020). जॉब सैटिस्फैक्शन: एक लिटरेचर रिव्यू। मैनेजमेंट रिसर्च एंड प्रैक्टिस, 3(4), 77–86.
[10]. घोष, एस., और बैरग्या, एस. (2021). सेकेंडरी स्कूल के टीचरों का टीचिंग प्रोफेशन के प्रति रवैया। एडुसर्च, 1(1), 55–58.
[11]. शिवकुमार, आर. (2022). सेल्फ-कॉन्सेप्ट के संबंध में टीचिंग प्रोफेशन के प्रति टीचरों का रवैया। जर्नल ऑफ़ कंटेम्परेरी एजुकेशनल रिसर्च एंड इनोवेशन्स, 8(3), 283–288.